DSSSB PRT, TGT & PGT
दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड
ROJGAR WITH ANKIT
Part(A+B)
SCHOLAR BATCH
हिन्दी
प्रमुख उपन्यास और कवि
LIVE
04-07-2024 09:00 AM

उपन्यास

आधुनिक साहित्य में उपन्यास का महत्त्व वैसा ही है जैसा प्राचीन काव्य में महाकाव्य का। किन्तु महाकाव्य का नायक मध्य वर्ग या निम्न मध्यवर्ग का नहीं रहा किन्तु उपन्यास का रहा है। उपन्यास कहानी आदि में कथा नायक सामान्य, सर्वहारा के पात्र ही रहे हैं। यही कारण है की यह विधा जितनी मध्यवर्ग के साथ जुड़ी है शायद ही अन्य विधा जुड़ी होगी। देवता, प्रकृति, राजा सामंत के जीवनमूल्यों की जगह सामान्य मनुष्य का संघर्ष पहली बार साहित्य के भीतर उपन्यास द्वारा ही आया ऐसा संघर्ष पहली बार साहित्य के भीतर उपन्यास द्वार ही आया ऐसा कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा। शायद यही कारण है कि विश्व स्तर पर भी उपन्यास विधा लोकप्रिय

रही है। उपन्यास शब्द 'उप' समीप तथा 'न्यास' धातु के योग से निर्मित हुआ है। उपन्यास शब्द का मूल अर्थ है- निकट रखी हुई वस्तु अर्थात् हमारी कथा, भाषा, संस्कृति, प्रकृति अपनी कहानी आदि को अपनी जूबानी में व्यक्त करना। प्रेमचन्द ने उपन्यास की परिभाषा देते हुए कहा है कि, "मैं उपन्यास को मानव जीवन का चित्र मात्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।" इस दृष्टि से उपन्यास की कथा मानव जीवन से जुड़ी और उसके व्यक्तित्व के रहस्यों को खोलने वाली होती है। वह कल्पनात्मक एवं यथार्थ होती है। जीवन की तरह उसकी घटनाएँ क्रमबद्ध होती है।

लाल श्री निवास दास

बहुपठित व्यक्ति थे। उनका प्रसिद्ध उपन्यास परीक्षा गुरु '1882' ई. अपनी भाषा में नई चाल की पुस्तक है। परीक्षा गुरु हिन्दी का प्रथम अंग्रेजी ढंग का मौलिक उपन्यास है। यह उपन्यास '21' प्रकरण में विभक्त है तथा इस उपन्यास में दिल्ली के एक कल्पित रईस लाला 'मदनमोहन' का स्वाभाविक चित्र उतारा गया है।

अन्यपात्र - लाला ब्रज किशोर वकील, चुन्नीलाल शम्भूदयाल आदि।

बालकृष्ण भट्ट

पं. बालकृष्ण भट्ट के दो उपन्यास 'नूतन ब्रह्मचारी (1886 ई.) सौ अजान एक सुजान' (1892 ई.) आदि प्रसिद्ध उपन्यास है। श्री मधुकर भट्ट ने सन् 1879 के नवम्बर मास के 'हिन्दी प्रदीप' की फाइलों के आधार पर उनके रहस्य कथा नामक तीसरे उपन्यास का उल्लेख किया।

नूतन ब्रह्मचारी (1886)

इस उपन्यास में महाराष्ट्रीय ब्राह्मण विट्ठलराव के पुत्र ब्रह्मचारी विनायक के सरल व्यवहार के प्रभाव से डाकुओं के सरदार का हृदय परिवर्तन दिखाया गया है। यह उपन्यास विद्यार्थियों को चारित्रिक शिक्षा देने के लिए लिखा गया है।

सौअजान एक सुजान (1892)

इस उपन्यास में विलासी जीवन को केन्द्र बनाकर लिखा गया है। उपन्यास के मुख्य मात्र सुजान, सेठ हीराचन्द, ऋद्धिनाथ और निधिनाथ एवं चन्द्रशेखर है।

ठाकुर जगमोहन सिंह

ठाकुर जगमोहन सिंह का 'श्यामा स्वप्न' (1888 ई.) उपन्यास में श्यामा और श्याम सुन्दर की प्रणय कथा का एक काल्पनिक चित्र है। इसमें मध्य कालीन प्रेम कहानियों के सभी उपकरण-सखी, दूत, प्रेम-पत्र, मिलन, विरह आदि विद्यमान हैं। इसके दृश्य वर्णन संस्कृत कवियों की स्मृति सजीव कर देते हैं। काल्पनिक होते हुए भी 'श्यामा स्वप्न' की कहानी ब्राह्मण कुमारी और क्षत्रिय कुमार के प्रणय-सम्बन्ध की सम्भावना और संकेत करके नव्य समाज की नवीन मान्यताओं का प्रतिनिधित्व करती है।

श्री किशोरी लाल गोस्वामी

श्री किशोरी लाल गोस्वामी प्रेमचन्द-पूर्व-युग के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपन्यासकार हैं तथा ये निम्बार्क सम्प्रदाय के अनुयायी थे। इन्होंने लगभग '65' उपन्यास लिखे है। इनके सामाजिक उपन्यासों में त्रिवेणी या सौभाग्य श्रेणी (1890 ई.) लीलावती या आदर्श सती (1901 ई.) स्वर्गीयकुसुम व। कुसुम कुमारी (1901) राजकुमारी (1902 ई.) चपला या नव्य समाज (1903-04 ई.) पुनर्जन्म या सौतिया डाह (1907 ई.) माधवी माधव या मदन मोहिनी (1909) अगूंठी का नगीना (1918)।

त्रिवेणी या सौभाग्य श्रेणी (1890) - इस उपन्यास में मनोहरदास नामक एक धर्मात्मा व्यक्ति एवं उसकी पत्नी 'त्रिवेणी' की कहानी है।

लीलावती या आदर्शसती- इस उपन्यास में लेखक ने नवीन सामाजिक जीवन की विडम्बना को दर्शाया है तथा नारी की मार्मिक स्थिति का चित्रण किया है। उपन्यास के मुख्य पात्र लीलावती, ललित किशोर एवं लम्पट बालकृष्ण हैं।

'स्वर्गीय कुसुम या कुसुम कुमारी' (1901) उपन्यास की नायिका 'कुसुम कुमारी' बिहार के एक बड़े जमींदार 'कर्ण सिंह' की बेटी है। देवदासी प्रथा के अनुसार उसे देवमन्दिर में अर्पित कर दिया गया है। उसे एक वेश्या खरीद लेती है और संगीत-नृत्य की शिक्षा दिलवाकर वेश्यावृत्ति के लिए बाध्य करती है। उपन्यास की नायिका कहती है। "संसार में यदि सचमुच किसी का जीवन मरने से करोड़ दर्जे बुरा होता है, तो वह वेश्याओं का है।" यह उपन्यास वेश्या जीवन के गहरे दर्द को सामने लाने वाला यह संभवत: हिन्दी का पहला उपन्यास है।

'चपला' या नव्य समाज- यह उपन्यास अपने समय का बहुचर्चित उपन्यास है। इस उपन्यास की मुख्य कहानी राजा, राधा किशोर के परिवार से सम्बन्ध रखती है। उपन्यास के अन्य प्रात्र कामिनी, चपला और कादम्बिनी ब्रज किशोर, बाबू हर प्रसाद घनश्याम आदि।

माधवी माधव या मदन मोहिनी - इस उपन्यास में अर्थ काम और मोक्ष तीनों की सिद्धि दिखाने की चेष्टा की गई है। मुख्य कथा, नायक 'माधव' और नायिका 'माधवी' के प्रेम और विवाह की है। मदन उपनायक और मोहिनी उपनायिका है। इनकी जोड़ी भी आदर्श है। इन सभी पात्रों का विवाह धर्मानुसार होता है। लेखक ने इन आदर्श पात्रों के विवाह में बाधा डालने वाले अधर्मी पात्रों का दुःखद अन्त दिखाकर धर्म एवं नीति की श्रेष्ठता को प्रमाणित किया है।

अँगूठी का नगीना- अँगूठी का नगीना उपन्यास में मदनमोहन और लक्ष्मी के मर्यादित प्रेम की कहानी वर्णित है। रामसरन खलनायक है। वह स्वयं लक्ष्मी को प्राप्त करना चाहता है। अन्तत: सच्चे प्रेम की जीत होती है और लक्ष्मी मदनमोहन को प्राप्त होती है।

श्री अयोध्या सिंह उपाध्याय

श्री अयोध्य सिंह उपाध्याय ने ठेठ हिन्दी का ढाठ या 'देवबाला' 1899 ई. तथा 'अधखिला फूल' (1907 ई.) दो सामाजिक उपन्यास लिखें।

अधखिला फूल-अधखिला फूल उपन्यास में धर्म की महत्ता प्रतिपादित की गई है और धार्मिक अंधविश्वासों का कुपरिणाम भी दिखाया गया है।

'ठेठ हिन्दी के ठाट' - उपन्यास में लेखक ने संकल्प लेकर ठेठ हिन्दी का प्रयोग किया हैं।

'ठेठ हिन्दी का ठाट' में भी छोटे-छोटे तद्भव शब्दों का ही अधिक प्रयोग किया गया है।

गंगा प्रसाद गुप्त

गंगा प्रसाद गुप्त ने कई ऐतिहासिक उपन्यास लिखे। इनमें नूरजहाँ (1902 ई.) 'वीर पत्नी' (1903 ई.) 'कुमार सिंह सेनापति (1903) हम्मीर (1903 ई.) आदि प्रमुख हैं।

श्री मथुरा प्रसाद शर्मा

श्री मथुरा प्रसाद शर्मा का एक ही ऐतिहासिक उपन्यास नूरजहाँ बेगम व 'जहाँगीर' (1905 ई.) प्रसिद्ध है। इनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें इतिहास अधिक और कल्पना कम है। वस्तुतः नूरजहाँ का जीवन स्वयं उपन्यास है। लेखक ने नूरजहाँ और जहाँगीर के चिरपरिचित वृत्तान्त को कथाक्रम में ढालकर उपस्थित किया है।

श्री बलदेव प्रसाद मिश्र

श्री बलदेव प्रसाद मिश्र ने 'अनारकली' (1900 ई.) पृथ्वीराज चौहान' (1902) तथा 'पानीपत' (1902 ई.) तीन ऐतिहासिक उपन्यास लिखे। मिश्र जी ने मुगलकाल के इतिहास से परे जाकर अन्तिम हिन्दु सम्राट पृथ्वीराज के जीवन पर उपन्यास लिखा।

बाबू ब्रजनन्दन सहाय

बाबू ब्रजनन्दन सहाय ने 'लालचीन' नामक एक ऐतिहासिक उपन्यास लिखा। इस उपन्यास में तुर्की गुलामों के सरदार तुगलचीन और दक्षिण के शासक गयासुद्दीन (1397 ई.) के संघर्ष की कहानी कहीं गई है।

मिश्र बन्धु

मिश्र बन्धुओं ने 'वीर मणि' नामक ऐतिहासिक उपन्यास में नैमिषारण्य के नैमिषनाथ त्रिपाठी के पुत्र वीरमणि त्रिपाठी के माध्यम से कान्यकुब्ज ब्राह्मणों का उल्लेख किया है। साथ-साथ इस उपन्यास में वर्तमान समय में चल रही हिन्दु-समाज की समस्याओं की ओर भी संकेत किया है।

देवकीनन्दन खत्री

हिन्दी में तिलसमी-ऐयारी उपन्यासों के प्रवर्तक बाबू 'देवकीनन्दन • खत्री' है। इनके द्वारा लिखित तिलस्मी-ऐयारी उपन्यास इस प्रकार है-

- **चन्द्रकान्ता संतति (1888 ई.)** - 'चन्द्रकान्ता संतति उपन्यास में विजयगढ़ की राजकुमारी चन्द्रकान्त के दो पुत्रों की कथा वर्णित है।

• **नरेन्द्र मोहिनी -** 'नरेन्द्र मोहिनी' उपन्यास में राजकुमार नरेन्द्र पर एक साथ दो राजकुमारियाँ आसक्त होती है। इन राजकुमारियों में एक अत्यन्त धूर्ता और कुटिला है। वह राजकुमार को धोखे में डालकर तिलस्म में फँसा लेती है। अन्ततः राजकुमार मुक्त होता है और दूसरी राजकुमारी (मोहिनी) जो सरल हृदया और राजकुमार की सच्ची अनुरागिनी हैं अंत में राजकुमार को प्राप्त कर लेती है।

भूतनाथ (अधूरा) - भूतनाथ में चन्द्रकान्ता सन्तति के ही एक अत्यन्त कुशल ऐयार भूतनाथ की दिलचस्प कथा वर्णित है। बाबू गोपाल राम गहमरी के बाद श्री रामलाल वर्मा ने 'चालक चोर' 'जासूस के घर खून', 'जासूसी कुत्ता' 'अस्सी हजार की चोरी' आदि कई उपन्यास लिखकर जासूसी उपन्यासों के क्षेत्र में सर्वाधिक सफलता बाबू गोपाल राम गहमरी को ही प्राप्त हुई।

प्रेमचन्द

मुंशी प्रेमचन्द हिन्दी कथा साहित्य के महान साहित्यकार माने जाते हैं, उन्होंने न केवल कहानी बल्कि उपन्यास लेखन में भी ऐसा काम किया कि इन दोनों विधाओं का काल विभाजन उन्हें केन्द्र में रखकर किया गया। वैसे उनका नाम धनपत राय श्रीवास्तव था, लेकिन हिन्दी साहित्य में उन्हें मकबूलियत प्रेमचन्द नाम से मिली। वैसे उर्दू लेखन के शुरुआती दिनों में उन्होंने अपना नाम नवाब राय भी रखा था। उनके पिता अजायब राय और दादा गुरु 'सहाय राय' थे। प्रेमचन्द आदर्शोन्मुख यथार्थवाद, यथार्थोन्मुख आदर्शवादी उपन्यासकार है। इनके द्वारा लिखित उपन्यास हैं-

• **सेवासदन (1918 ई.)** सेवासदन प्रेमचन्द द्वारा रचित उपन्यास है। प्रेमचन्द ने सेवासदन उपन्यास सन् '1918' में उर्दू भाषा में लिखा था। उर्दू में यह उपन्यास बाजारे-हुस्न के नाम से लिखा गया था। 'सेवासदन' में नारी जीवन की समस्याओं के साथ-साथ समाज के धर्माचार्यों, मठाधीशों, धनपतियों, सुधारकों के आडम्बर, ढोंग, पाखण्ड, चरित्रहीनता, दहेज प्रथा, बेमेल विवाह, पुलिस की घूसखोरी, वेश्यागमन, मनुष्य के दोहरे चरित्र, साम्प्रदायिक द्वेष आदि सामाजिक विकृतियों का विवरण मिलता है। उपन्यास के प्रमुख पात्र; सुमन, कृष्णचन्द, गंगाजली, गजाधर प्रसाद, सदन, शांत, पद्मसिंह, विट्ठलदास, भोलीबाई आदि हैं।